Twitter Thread by Vedic Wisdom...■

Vedic Wisdom...■
@VedicWisdom1

Animal Sacrifice in Yajñas

Read this thread to know how animal sacrifice got started in Yajñas and what Rishis thought about it.



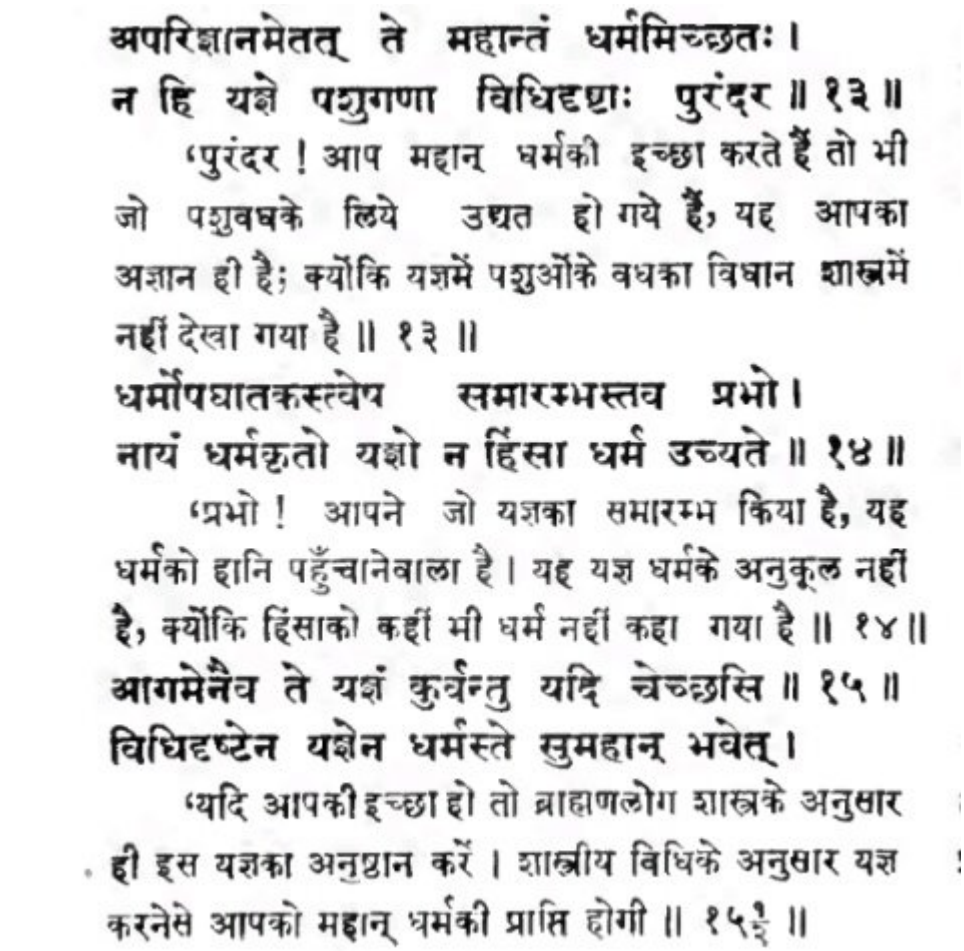
Once Upon a time, Great and Powerful Indra decided to do Yajña, there were large scale preparations, Rishis were chanting mantras, then Indra decided to SIay animals there

पुरा शक्रस्य यजतः सर्व ऊचुर्महर्षयः।
ऋत्विक्षु कर्मव्यग्रेषु वितते यज्ञकर्मणि ॥ ८ ॥
हूयमाने तथा वह्नौ होत्रे गुणसमन्विते।
देवेष्वाहूयमानेषु स्थितेषु परमर्षिषु ॥ ९ ॥
सुप्रतीतैस्तथा विप्रैः स्वागमैः सुस्वरैर्नृप।
अश्रान्तैश्चापि लघुभिरध्वर्युवृषभैस्तथा ॥ १० ॥
आलम्भसमये तस्मिन् गृहीतेषु पशुष्वथ।
महर्षयो महाराज बभूवुः कृपयान्विताः ॥ ११ ॥

राजन्! प्राचीन कालकी बात है, जब इन्द्रका यज्ञ हो रहा था और सब महर्षि मन्त्रोच्चारण कर रहे थे, ऋत्विजलोग अपने-अपने कर्मोंमें लगे थे, यज्ञका काम बड़े समारोह और विस्तारके साथ चल रहा था, उत्तम गुणोंसे युक्त आहुतियों-का अग्निमें हवन किया जा रहा था, देवताओंका आवाहन हो रहा था, बड़े-बड़े महर्षि खड़े थे, ब्राह्मणलोग बड़ी प्रसन्नताके साथ वेदोक्त मन्त्रोंका उत्तम स्वरसे पाठ करते थे और शीघ्रकारी उत्तम अध्वर्युगण बिना किसी थकावटके अपने कर्तव्यका पालन कर रहे थे। इतनेहीमें पशुओंके आलम्भका समय आया। महाराज! जब पशु पकड़ लिये गये, तब महर्षियोंको उनपर बड़ी दया आयी ॥ ८–११ ॥

Rishis stopped him, Rishis clearly told him that There is NO mention of K!lling animals in Yajñas in shastras,

K!lling animals in Yajñas is against Dharma, hence please allow Brahmins to perform it according to shastras



अपरिज्ञानमेतत् ते महान्तं धर्ममिच्छतः।
न हि यज्ञे पशुगणा विधिदृष्टाः पुरंदर ॥ १३ ॥

'पुरंदर! आप महान् धर्मकी इच्छा करते हैं तो भी जो पशुवधके लिये उद्यत हो गये हैं, यह आपका अज्ञान ही है; क्योंकि यज्ञमें पशुओंके वधका विधान शास्त्रमें नहीं देखा गया है ॥ १३ ॥

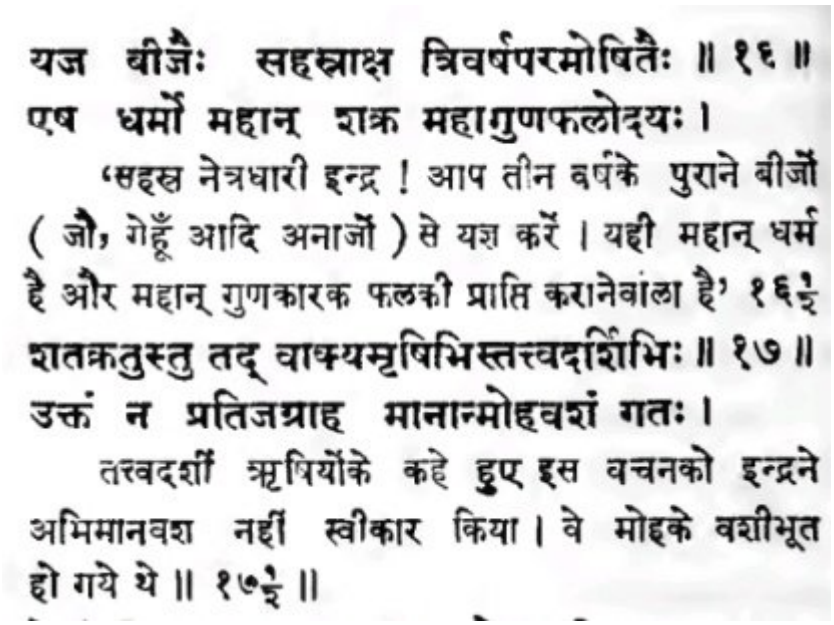
धर्मोपघातकस्त्वेष समारम्भस्तव प्रभो।
नायं धर्मकृतो यज्ञो न हिंसा धर्म उच्यते ॥ १४ ॥

'प्रभो! आपने जो यज्ञका समारम्भ किया है, यह धर्मको हानि पहुँचानेवाला है। यह यज्ञ धर्मके अनुकूल नहीं है, क्योंकि हिंसाको कहीं भी धर्म नहीं कहा गया है ॥ १४ ॥

आगमेनैव ते यज्ञं कुर्वन्तु यदि चेच्छसि ॥ १५ ॥
विधिदृष्टेन यज्ञेन धर्मस्ते सुमहान् भवेत्।

'यदि आपकी इच्छा हो तो ब्राह्मणलोग शास्त्रके अनुसार ही इस यज्ञका अनुष्ठान करें। शास्त्रीय विधिके अनुसार यज्ञ करनेसे आपको महान् धर्मकी प्राप्ति होगी ॥ १५½ ॥

Rishis said, Yajña must be done with seeds, this is what Dharma says.
But Imdra had a Big ego, he refused to follow Dharma



यज बीजैः सहस्राक्ष त्रिवर्षपरमोषितैः ॥ १६ ॥
एष धर्मो महान् शक्र महागुणफलोदयः।

'सहस्र नेत्रधारी इन्द्र! आप तीन वर्षके पुराने बीजों (जौ, गेहूँ आदि अनाजों) से यज्ञ करें। यही महान् धर्म है और महान् गुणकारक फलकी प्राप्ति करानेवाला है' १६½

शतक्रतुस्तु तद् वाक्यमृषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ १७ ॥
उक्तं न प्रतिजग्राह मानान्मोहवशं गतः।

तत्त्वदर्शी ऋषियोंके कहे हुए इस वचनको इन्द्रने अभिमानवश नहीं स्वीकार किया। वे मोहके वशीभूत हो गये थे ॥ १७½ ॥

So they went to King Vasu and asked him, who is correct, King lied that you can do yajña with anything, because if this he was punished.

(Mahabharata AshwamedhikaParva adhyay 91)

भरतनन्दन ! वे तत्त्वदर्शी ऋषि जब इस विवादसे बहुत खिन्न हो गये, तब उन्होंने इन्द्रके साथ सलाह लेकर इस विषयमें राजा उपरिचर वसुसे पूछा—'महामते ! हमलोग धर्मविषयक संदेहमें पड़े हुए हैं। आप हमसे सच्ची बात बताइये ॥ १९-२० ॥

महाभाग कथं यज्ञेष्वागमो नृपसत्तम।
यष्टव्यं पशुभिर्मुख्यैरथो बीजै रसैरिति ॥ २१ ॥

'महाभाग नृपश्रेष्ठ ! यज्ञोंके विषयमें शास्त्रका मत कैसा है ? मुख्य-मुख्य पशुओंद्वारा यज्ञ करना चाहिये अथवा बीजों एवं रसोंद्वारा' ॥ २१ ॥

तच्छ्रुत्वा तु वसुस्तेषामविचार्य बलाबलम्।
यथोपनीतैर्यष्टव्यमिति प्रोवाच पार्थिवः ॥ २२ ॥

यह सुनकर राजा वसुने उन दोनों पक्षोंके कथनमें कितना सार या असार है, इसका विचार न करके यों ही बोल दिया कि 'जब जो वस्तु मिल जाय, उसीसे यज्ञ कर लेना चाहिये' ॥ २२ ॥

एवमुक्त्वा स नृपतिः प्रविवेश रसातलम्।
उक्त्वाथ वितथं प्रश्नं चेदीनामीश्वरः प्रभुः ॥ २३ ॥

इस प्रकार कहकर असत्य निर्णय देनेके कारण चेदिराज वसुको रसातलमें जाना पड़ा ॥ २३ ॥

Same even is mentioned in Shanti parva 337.

Devtas wanted k!ll Goat in Yajña, Rishis told them that Aja means seed, K!lling animals in Yajña is not allowed

युधिष्ठिर उवाच

यदा भागवतोऽत्यर्थमासीद् राजा महान् वसुः।
किमर्थं स परिभ्रष्टो विवेश विवरं भुवः ॥ १ ॥

युधिष्ठिरने पूछा—पितामह ! राजा वसु जब भगवान्‌के अत्यन्त भक्त और महान् पुरुष थे, तब वे स्वर्गसे भ्रष्ट होकर पातालमें कैसे प्रविष्ट हुए ? ॥ १ ॥

भीष्म उवाच

अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम्।
ऋषीणां चैव संवादं त्रिदशानां च भारत ॥ २ ॥

भीष्मजीने कहा—भरतनन्दन ! इस विषयमें ज्ञानी-जन ऋषियों और देवताओंके संवादरूप इस प्राचीन इतिहासको उद्धृत किया करते हैं—॥ २ ॥

अजेन यष्टव्यमिति प्राहुर्देवा द्विजोत्तमान्।
स च च्छागोऽप्यजो ज्ञेयो नान्यः पशुरिति स्थितिः ॥ ३ ॥

'अजके द्वारा यज्ञ करना चाहिये—ऐसा विधान है।' ऐसा कहकर देवताओंने वहाँ आये हुए सभी श्रेष्ठ ब्रह्मर्षियोंसे कहा, 'यहाँ अजका अर्थ बकरा समझना चाहिये, दूसरा पशु नहीं, ऐसा निश्चय है' ॥ ३ ॥

ऋषय ऊचुः

बीजैर्यज्ञेषु यष्टव्यमिति वै वैदिकी श्रुतिः।
अजसंज्ञानि बीजानि च्छागं नो हन्तुमर्हथ ॥ ४ ॥

ऋषियोंने कहा—देवताओ ! यज्ञोंमें बीजोंद्वारा यजन करना चाहिये, ऐसी वैदिकी श्रुति है। बीजोंका ही नाम अज है; अतः बकरेका वध करना हमें उचित नहीं है ॥ ४ ॥

King Vasu came and he said animal sacrifice is allowed, Rishis got angry and they said

"If Shastras allow animal sacrifice then we will fall down, But if shastras prohibit animal sacrifice then you will fall down"

Because 9f this King Vasu fell down proving Rishis were right.

नैष धर्मः सतां देवा यत्र वध्येत वै पशुः।
इदं कृतयुगं श्रेष्ठं कथं वध्येत वै पशुः॥ ५॥

देवताओ ! जहाँ कहीं भी यज्ञमें पशुका वध हो, वह सत्पुरुषोंका धर्म नहीं है। यह श्रेष्ठ सत्ययुग चल रहा है। इसमें पशुका वध कैसे किया जा सकता है ? ॥ ५ ॥

भीष्म उवाच

तेषां संवदतामेवमृषीणां दिवुधैः सह।
मार्गागतो नृपश्रेष्ठस्तं देशं प्राप्तवान् वसुः॥ ६॥

भीष्मजी कहते हैं—राजन्! इस प्रकार जब ऋषियोंका देवताओंके साथ संवाद चल रहा था, उसी समय नृपश्रेष्ठ वसु भी उस मार्गसे आ निकले और उस स्थानपर पहुँच गये ॥ ६ ॥

अन्तरिक्षचरः श्रीमान् समग्रबलवाहनः।
तं दृष्ट्वा सहसाऽऽयान्तं वसुं ते त्वन्तरिक्षगम्॥ ७॥
ऊचुर्द्विजातयो देवानेष च्छेत्स्यति संशयम्।
यज्वा दानपतिः श्रेष्ठः सर्वभूतहितप्रियः॥ ८॥

श्रीमान् राजा उपरिचर अपनी सेना और वाहनोंके साथ आकाशमार्गसे चलते थे। उन अन्तरिक्षचारी वसुको सहसा आते देख ब्रह्मर्षियोंने देवताओंसे कहा—'ये नरेश हमलोगोंका संदेह दूर कर देंगे; क्योंकि ये यज्ञ करनेवाले, दानपति, श्रेष्ठ तथा सम्पूर्ण भूतोंके हितैषी एवं प्रिय हैं ॥ ७-८ ॥

कथंस्विदन्यथा ब्रूयादेष वाक्यं महान् वसुः।
एवं ते संविदं कृत्वा दिवुधा ऋषयस्तथा॥ ९॥
अपृच्छन् सहिताभ्येत्य वसुं राजानमन्तिकात्।

'ये महान् पुरुष वसु शास्त्रके विपरीत वचन कैसे कह सकते हैं।' ऐसी सम्मति करके देवताओं और ऋषियोंने एक साथ राजा वसुके पास आकर अपना प्रश्न उपस्थित किया—॥ ९½ ॥

भो राजन् केन यष्टव्यमजेनाहोस्विदौषधैः॥ १०॥
एतन्नः संशयं छिन्धि प्रमाणं नो भवान् मतः।

'राजन्! किसके द्वारा यज्ञ करना चाहिये ? बकरेके द्वारा अथवा अन्नद्वारा ? हमारे इस संदेहका आप निवारण करें। हमलोगोंकी रायमें आप ही प्रामाणिक व्यक्ति हैं' ॥ १०½ ॥

स तान् कृताञ्जलिर्भूत्वा परिपप्रच्छ वै वसुः॥ ११॥
कस्य वै को मतः कामो ब्रूत सत्यं द्विजोत्तमाः।

तब राजा वसुने हाथ जोड़कर उन सबसे पूछा—'विप्रवरो! आपलोग सच-सच बताइये, आपलोगोंमेंसे किस

देवानां तु पशुः पक्षो मतो राजन् वदस्व नः।

ऋषि बोले—नरेश्वर! हमलोगोंका पक्ष यह है कि अन्नसे यज्ञ करना चाहिये तथा देवताओंका पक्ष यह है कि छाग नामक पशुके द्वारा यज्ञ होना चाहिये। राजन्! अब आप हमें अपना निर्णय बताइये ॥ १२½ ॥

भीष्म उवाच

देवानां तु मतं ज्ञात्वा वसुना पक्षसंश्रयात्॥ १३॥
छागेनाजेन यष्टव्यमेवमुक्तं वचस्तदा।

भीष्मजी कहते हैं—राजन्! देवताओंका मत जानकर राजा वसुने उन्हींका पक्ष लेकर कह दिया कि अजका अर्थ है, छाग (बकरा); अतः उसीके द्वारा यज्ञ करना चाहिये ॥ १३½ ॥

कुपितास्ते ततः सर्वे मुनयः सूर्यवर्चसः॥ १४॥
ऊचुर्वसुं विमानस्थं देवपक्षार्थवादिनम्।

यह सुनकर वे सभी सूर्यके समान तेजस्वी ऋषि कुपित हो उठे और विमानपर बैठकर देवपक्षकी बात कहनेवाले वसुसे बोले—॥ १४½ ॥

सुरपक्षो गृहीतस्ते यस्मात् तस्माद् दिवः पत॥ १५॥
अद्यप्रभृति ते राजन्नाकाशे विहता गतिः।
अस्मच्छापाभिघातेन महीं भित्त्वा प्रवेक्ष्यसि॥ १६॥

'राजन्! तुमने यह जानकर भी कि अजका अर्थ अन्न है, देवताओंका पक्ष लिया है; इसलिये स्वर्गसे नीचे गिर जाओ। आजसे तुम्हारी आकाशमें विचरनेकी शक्ति नष्ट हो गयी। हमारे शापके आघातसे तुम पृथ्वीको भेदकर पातालमें प्रवेश करोगे ॥ १५-१६ ॥

(विरुद्धं वेदसूत्राणामुक्तं यदि भवेन्नृप।
वयं विरुद्धवचना यदि तत्र पतामहे॥)

'नरेश्वर! तुमने यदि वेद और सूत्रोंके विरुद्ध कहा हो तो हमारा यह शाप अवश्य लागू हो और यदि हम शास्त्रविरुद्ध वचन कहते हों तो हमारा पतन हो जाय' ॥

ततस्तस्मिन् मुहूर्तेऽथ राजोपरिचरस्तदा।
अधो वै सम्बभूवाशु भूमेर्विवरगो नृप॥ १७॥

राजन्! ऋषियोंके इतना कहते ही उसी क्षण राजा उपरिचर आकाशसे नीचे आ गये और तत्काल पृथ्वीके बिवरमें प्रवेश कर गये ॥ १७ ॥

स्मृतिस्त्वेनं न हि जहौ तदा नारायणाश्रया।
देवास्तु सहिताः सर्वे वसोः शापविमोक्षणम्॥ १८॥
चिन्तयामासुरव्यग्राः सुकृतं हि नृपस्य तत्।
अनेनास्मत्कृते राज्ञा शापः प्राप्तो महात्मना॥ १९॥

In Anushasana Parva Bheeshma says Animal sacrifice is not allowed in Yajñas, this was started by some Dhoorta people.

Hence according to him too, It is not allowed

यदि यज्ञांश्च वृक्षांश्च यूपांश्चोद्दिश्य मानवाः ।
वृथा मांसं न खादन्ति नैष धर्मः प्रशस्यते ॥ ८ ॥

यदि कहें कि मनुष्य यूपनिर्माणके उद्देश्यसे जो वृक्ष काटते और यज्ञके उद्देश्यसे पशुबलि देकर जो मांस खाते हैं, वह व्यर्थ नहीं है अपि तु धर्म ही है, तो यह ठीक नहीं; क्योंकि ऐसे धर्मकी कोई प्रशंसा नहीं करते ॥ ८ ॥

सुरा मत्स्या मधु मांसमासवं कृसरौदनम् ।
धूर्तैः प्रवर्तितं ह्येतन्नैतद् वेदेषु कल्पितम् ॥ ९ ॥

सुरा, आसव, मधु, मांस और मछली तथा तिल और चावलकी खिचड़ी—इन सब वस्तुओंको धूर्तोंने यज्ञमें प्रचलित कर दिया है । वेदोंमें इनके उपयोगका विधान नहीं है ॥९॥

मानान्मोहाच्च लोभाच्च लौल्यमेतत्प्रकल्पितम् ।

उन धूर्तोंने अभिमान, मोह और लोभके वशीभूत होकर उन वस्तुओंके प्रति अपनी यह लोलुपता ही प्रकट की है ।९½।

विष्णुमेवाभिजानन्ति सर्वयज्ञेषु ब्राह्मणाः ॥ १० ॥
पायसैः सुमनोभिश्च तस्यापि यजनं स्मृतम् ।

ब्राह्मण तो सम्पूर्ण यज्ञोंमें भगवान् विष्णुका ही आदर-भाव मानते हैं और खीर तथा फूल आदिसे ही उनकी पूजाका विधान है ॥ १०½ ॥

यज्ञियाश्चैव ये वृक्षा वेदेषु परिकल्पिताः ॥ ११ ॥

Also Nirukta clearly says Yajña is without Himsa.

I will make separate threads explaining about Pashu Yajñas, Pashubandh Yajñas and how animals were not harmed there and what was role of animals in Rituals.

■■■ ■■■■■■■■

Same thing in Matsya Purana chapter 143

Rishis clearly declared K!lling animals in Yajña is Adharma amd must not be done,

They Said it is GREAT ADHARMA to harm any animals in Yajñas and not in accordance with Vedas

अन्तर्हितायां संध्यायां सार्धं कृतयुगेन हि।
कालाख्यायां प्रवृत्तायां प्राप्ते त्रेतायुगे तदा॥ २
ओषधीषु च जातासु प्रवृत्ते वृष्टिसर्जने।
प्रतिष्ठितायां वार्तायां ग्रामेषु च पुरेषु च॥ ३
वर्णाश्रमप्रतिष्ठानं कृत्वन्तश्च वैः पुनः।
संहितास्तु सुसंहृत्य कथं यज्ञः प्रवर्तितः।
एतच्छ्रुत्वाब्रवीत् सूतः श्रूयतां तत्प्रचोदितम्॥ ४

सूत उवाच

मन्त्रान् वै योजयित्वा तु इहामुत्र च कर्मसु।
तथा विश्वभुगिन्द्रस्तु यज्ञं प्रावर्तयत् प्रभुः॥ ५
दैवतैः सह संहृत्य सर्वसाधनसंवृतः।
तस्याश्वमेधे विततते समाजग्मुर्महर्षयः॥ ६
यज्ञकर्मण्यवर्तन्त कर्मण्यग्रे तथर्त्विजः।
हूयमाने देवहोत्रे अग्नौ बहुविधं हविः॥ ७
सम्प्रतीतेषु देवेषु सामगेषु च सुस्वरम्।
परिक्रान्तेषु लघुषु अध्वर्युपुरुषेषु च॥ ८
आलब्धेषु च मध्ये तु तथा पशुगणेषु वै।
आहूतेषु च देवेषु यज्ञभुक्षु ततस्तदा॥ ९
य इन्द्रियात्मका देवा यज्ञभागभुजस्तु ते।
तान् यजन्ति तदा देवाः कल्पादिषु भवन्ति ये॥ १०
अध्वर्यवः प्रैषकाले व्युत्थिता ऋषयस्तथा।
महर्षयश्च तान् दृष्ट्वा दीनान् पशुगणांस्तदा।
विश्वभुजं ते त्वपृच्छन् कथं यज्ञविधिस्तव॥ ११
अधर्मो बलवानेष हिंसा धर्मेप्सया तव।
नव पशुविधिस्त्विष्टस्तव यज्ञे सुरोत्तम॥ १२
अधर्मो धर्मघाताय प्रारब्धः पशुभिस्त्वया।
नायं धर्मो ह्यधर्मोऽयं न हिंसा धर्म उच्यते।
आगमेन भवान् धर्मं प्रकरोतु यदीच्छति॥ १३
विधिदृष्टेन यज्ञेन धर्मेणाव्यसनेन तु।
यज्ञबीजैः सुरश्रेष्ठ त्रिवर्गपरिमोषितैः॥ १४

जब कृतयुगके साथ उसकी संध्या (तथा संध्यांश) दोनों अन्तर्हित हो गये, तब कालक्रमानुसार त्रेतायुगकी संधि प्राप्त हुई। उस समय वृष्टि होनेपर ओषधियाँ उत्पन्न हुईं तथा ग्रामों एवं नगरोंमें वार्ता-वृत्तिकी स्थापना हो गयी। उसके बाद वर्णाश्रमकी स्थापना करके परम्परागत आये हुए मन्त्रोंद्वारा पुनः संहिताओंको एकत्रकर यज्ञकी प्रथा किस प्रकार प्रचलित हुई? हमलोगोंके प्रति इसका यथार्थरूपसे वर्णन कीजिये। यह सुनकर सूतजीने कहा—'आपलोगोंके प्रश्नानुसार कह रहा हूँ, सुनिये'॥ १—४॥

सूतजी कहते हैं—ऋषियो! विश्वभोक्ता सामर्थ्यशाली इन्द्रने ऐहलौकिक तथा पारलौकिक कर्मोंमें मन्त्रोंको प्रयुक्तकर देवताओंके साथ सम्पूर्ण साधनोंसे सम्पन्न हो यज्ञ प्रारम्भ किया। उनके उस अश्वमेध-यज्ञके आरम्भ होनेपर उसमें महर्षिगण उपस्थित हुए। उस यज्ञकर्ममें ऋत्विग्गण यज्ञक्रियाको आगे बढ़ा रहे थे। उस समय सर्वप्रथम अग्निमें अनेकों प्रकारके हवनीय पदार्थ डाले जा रहे थे, सामगान करनेवाले देवगण विश्वासपूर्वक ऊँचे स्वरसे सामगान कर रहे थे, अध्वर्युगण धीमे स्वरसे मन्त्रोंका उच्चारण कर रहे थे। पशुओंका समूह मण्डपके मध्यभागमें लाया जा रहा था, यज्ञभोक्ता देवोंका आवाहन हो चुका था। जो इन्द्रियात्मक देवता तथा जो यज्ञभागके भोक्ता थे और जो प्रत्येक कल्पके आदिमें उत्पन्न होनेवाले अजानदेव थे, देवगण उनका यजन कर रहे थे। इसी बीच जब यजुर्वेदके अध्येता एवं हवनकर्ता ऋषिगण पशु-बलिका उपक्रम करने लगे, तब यूथ-के-यूथ ऋषि तथा महर्षि उन दीन पशुओंको देखकर उठ खड़े हुए और वे विश्वभुग् नामके विश्वभोक्ता इन्द्रसे पूछने लगे—'देवराज! आपके यज्ञकी यह कैसी विधि है? आप धर्म-प्राप्तिकी अभिलाषासे जो जीव-हिंसा करनेके लिये उद्यत हैं, यह महान् अधर्म है। सुरश्रेष्ठ! आपके यज्ञमें पशु-हिंसाकी यह नवीन विधि दीख रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि आप पशु-हिंसाके व्याजसे धर्मका विनाश करनेके लिये अधर्म करनेपर तुले हुए हैं। यह धर्म नहीं है। यह सरासर अधर्म है। जीव-हिंसा धर्म नहीं कही जाती। इसलिये यदि आप धर्म करना चाहते हैं तो वेदविहित धर्मका अनुष्ठान कीजिये। सुरश्रेष्ठ! वेदविहित विधिके अनुसार किये हुए यज्ञ और दुर्व्यसनरहित धर्मके पालनसे यज्ञके बीजभूत त्रिवर्ग (नित्य धर्म, अर्थ, काम)-की प्राप्ति होती है।

Exactly same thing in Vaayu Purana Chapter 57

Rishis clearly said Vedas do not allow K!lling of animals in Yajñas, and also that this is Great Adharma, One must follow Vedas for Yajña hence do it with seeds

अथाश्वमेधे वितते समाजग्मुर्महर्षयः । यजन्ते पशुभिर्मेध्यैर्हुत्वा सर्वे समागताः ॥९२
कर्मव्यग्रेषु ऋत्विक्षु सतते यज्ञकर्मणि । संप्रगीतेषु तेष्वेवमागमेष्वथ सुस्वरम् ॥९३
परिक्रान्तेषु लघुषु अध्वर्युवृषभेषु च । आलब्धेषु च मेध्येषु तथा पशुगणेषु वै ॥९४
हविष्यग्नौ हूयमाने देवानां देवहोतृभिः । आहूतेषु च देवेषु यज्ञभाक्षु महात्मसु ॥९५
य इन्द्रियात्मका देवा यज्ञभाजस्तथा तु ये । तान्यजन्ते तदा देवाः कल्पादिषु भवन्ति ये ॥९६
अध्वर्यवः प्रैषकाले व्युत्थिता ये महर्षयः । महर्षयस्तु तान्दृष्ट्वा दीनान्पशुगणांस्थितान् ॥
प्रपच्छुरिन्द्रं संभूय कोऽयं यज्ञविधिस्तव ॥९७
अधर्मो बलवानेष हिंसाधर्मेप्सया तव । नेष्टः पशुवधस्त्वेव तव यज्ञे सुरोत्तम ॥९८
अधर्मो धर्मघाताय प्रारब्धः पशुभिस्त्वया । नायं धर्मो ह्यधर्मोऽयं न हिंसा धर्म उच्यते ॥९९
आगमेन भवान्यज्ञं करोतु यदिहेच्छसि । विधिदृष्टेन यज्ञेन धर्ममव्ययहेतुना ॥
यज्ञबीजैः सुरश्रेष्ठ येषु हिंसा न विद्यते ॥१००

कर्मों मे नियंत्रित कर सभी देवताओं के साथ सम्पूर्ण सामग्रियों एवं उपकरणों समेत यज्ञ की प्रथा प्रचलित की; उस समय अश्वमेध यज्ञ का कार्य जब प्रारम्भ हुआ सभी महर्षि गण आकर उनमें सम्मिलित हो गये, और मेध्य पशुओं द्वारा यज्ञ का कार्य प्रारम्भ सुनकर सभी लोग दर्शनार्थ उपस्थित हुये, उस समय जब सभी पुरोहित गण उस निरन्तर चलने वाले यज्ञ कर्म मे व्यस्त हो गये, उच्च सुमधुर स्वर मे वेद की ऋचाओं का गायन होने लगा, यज्ञ कर्म में व्यस्त रहने के कारण प्रमुख-प्रमुख अध्वर्युगण इधर उधर शीघ्रता में घूमने फिरने लगे ।८९-९३½। हवनीय पशुओ का वध होने लगा, देवताओं के होता गण अग्नि में हविष् की आहुति देने लगे, यज्ञ में भाग पाने वाले देवता एव महात्मागण आवाहित होने लगे, देवता लोग प्रत्येक कल्पों में यज्ञ मे भाग प्राप्त करने के अधिकारी इन्द्रियात्मक देव गणों की पूजा करने लगे, ठीक उसी समय यज्ञ मण्डल में समागत महर्षिगण अध्वर्युगण को पशुओ के स्नानादि में समुद्यत देखकर उन पशुओ की दीनता से करुणार्द्र होकर इन्द्र से बोले कि यह तुम्हारे यज्ञ की कैसी विधि है ।९४-९७। हिंसामय धर्म कार्य करने को इच्छुक तुम यह महान अधर्म कर रहे हो, सुरोत्तम ! तुम्हारे जैसे देवराज के यज्ञ से यह पशुवध कल्याणकारी नही है। इन दीन पशुओं की हिंसा से तुम अपने संचित धर्म का विनाश कर रहे हो, यह पशुहिसा कदापि धर्म नही है, हिंसा कभी भी धर्म नही कहा जाता। यदि तुम्हे यज्ञ करने की अभिलाषा है तो वेद विहित यज्ञ का अनुष्ठान करो हे सुरश्रेष्ठ ! वेदानुमत विधि से किया गया यज्ञ अक्षयफलदायी होगा, उन यज्ञ बीजों से तुम यज्ञ प्रारम्भ करो, जिनमें हिंसा का नाम नही है ।९८-१००। इन्द्र ! प्राचीन काल में तीन वर्ष के पुराने रखे

Also Muni N■rada criticizes animal sacrifice in Bhagwatam 4.25.7-8.

राजाने कहा—महाभाग नारदजी! मेरी बुद्धि कर्ममें फँसी हुई है, इसलिये मुझे परम कल्याणका कोई पता नहीं है। आप मुझे विशुद्ध ज्ञानका उपदेश दीजिये, जिससे मैं इस कर्मबन्धनसे छूट जाऊँ ।।५।। जो पुरुष कपटधर्ममय गृहस्थाश्रममें ही रहता हुआ पुत्र, स्त्री और धनको ही परम पुरुषार्थ मानता है, वह अज्ञानवश संसारारण्यमें ही भटकता रहनेके कारण उस परम कल्याणको प्राप्त नहीं कर सकता ।।६।।

श्रीनारदजीने कहा—देखो, देखो, राजन्! तुमने यज्ञमें निर्दयतापूर्वक जिन हजारों पशुओंकी बलि दी है—उन्हें आकाशमें देखो ।।७।। ये सब तुम्हारे द्वारा प्राप्त हुई पीड़ाओंको याद करते हुए बदला लेनेके लिये तुम्हारी बाट देख रहे हैं। जब तुम मरकर परलोकमें जाओगे, तब ये अत्यन्त क्रोधमें भरकर तुम्हें अपने लोहेके-से सींगोंसे छेदेंगे ।।८।। अच्छा, इस विषयमें मैं तुम्हें एक प्राचीन उपाख्यान सुनाता हूँ। वह राजा पुरंजनका चरित्र है, उसे तुम मुझसे सावधान होकर सुनो ।।९।।

राजन्! पूर्वकालमें पुरंजन नामका एक बड़ा यशस्वी राजा था। उसका अविज्ञात नामक एक मित्र था। कोई भी उसकी चेष्टाओंको समझ नहीं सकता था ।।१०।। राजा पुरंजन अपने रहनेयोग्य स्थानकी खोजमें सारी पृथ्वीमें घूमा; फिर भी जब उसे कोई अनुरूप स्थान न मिला, तब वह कुछ उदास-सा हो गया ।।११।। उसे तरह-तरहके भोगोंकी लालसा थी; उन्हें भोगनेके लिये उसने संसारमें जितने नगर देखे, उनमेंसे कोई भी उसे ठीक न जँचा ।।१२।।

From all these Evidences it is very clear that Vedas do not allow K!lling of animals in Yajña.

Adding One more, Brahmanda Purana 1.2.30
Exactly same

the Soma juice). On seeing the miserable flocks of animals, the great sages collectively asked Indra—' "What is the procedure of your Yajña ?[1]

17. This is highly unrighteous and sinful. It (this sacrifice) has been spread (performed) with a desire for rites involving violence to life). In your Yajña, O excellent god, the killing of animals is involved.

18. An evil thing has been started for the destruction of Dharma on account of this injury to the animals. This is not Dharma; it is Adharma (sin). Violence is not called as Dharma (Righteous).

19. If your honour wishes to perform the Yajña in accordance with the scriptures, perform the Yajña by means of Dharma that does not infringe established institutions. Perform the Yajña according to the injunctions laid down (in scriptures).

20-21. O excellent god ! (sacrifice should be performed) with sacrificial seeds which are kept for a maximum period of three years and which do not put forth sprouts. In them (such seeds described above) no violence (to life) exists (is involved). O highly intelligent one, this is the Dharma laid down formerly by Brahmā".

Scriptural Reference used-

1. Mahabharata Ashwamedhika Parva Chapter 91

2. Mahabharata Shanti Parva chapter 337

3. Mahabharata Anushasana Parva chapter 115

4. Matsya Purana chapter 143

5. Vaayu Purana Chapter 57

6. Bhagwatam 4.25.7-8

7. Brahmanda Purana 1.2.30

Also see

8. Nirukta 1.8 ([illegible], [illegible])

9. Rigveda (1.1.4), (1.19.1), (1.14.11)

10. Atharva Veda (1.4.1)